सत्य के अनेक पहलू

प्रलिम्सि के लयि:

[महात्मा गांधी](), [अहसिा](), सत्याग्रह

मेन्स के लयि:

सत्य की दुवधिाएँ और जटलिता, ऐतहिासकि आख्यानों में नैतकि दुवधिाएँ, नैतकि आचरण और लोकतांत्रकि लोकाचार,**महात्मा गांधी की शक्षिाओं की प्रासंगकिता और महत्त्व**

[स्रोत: इंडयिन एक्सप्रेस]()

चर्चा में क्यों?

सहस्राब्दयिों से दार्शनकि **सत्य की प्रकृत,ि** जानने की **योग्यता तथा क्या वह सार्वभौमकि** है या व्यक्तपिरक है, जैसे प्रश्नों से जूझते रहे हैं, जसिके परणिामस्वरूप इस अवधारणा पर वभिन्नि दृष्टकिोण सामने आए हैं।

सत्य के संबंध में वभिन्नि वचिारकों के दृष्टकिोण क्या हैं?

- **पत्राचार सद्धिांत:**
  - [**अरस्तू**]() **और बर्ट्रेंड रसेल** जैसे वचिारकों का मानना है कि सत्य का नरि्धारण हमारे कथनों या वचिारों तथा बाह्य वशि्व के मध्य स्थापति सामंजस्य से होता है **अर्थात् एक कथन सत्य है यदि वह वास्तवकिता को सटीक रूप से प्रतबिबिति करता** है।
  - उदाहरण के लयि **"घास हरी है"** सत्य है क्योंकि वास्तवकि संसार में घास में **हरेपन का गुण** होता है।
  - यह सद्धिांत उन **अमूर्त सत्यों (जैसे, गणतिीय प्रमेय) पर वचिार नहीं** करता जो प्रत्यक्ष रूप से भौतकि वास्तवकिता से समानता नहीं रखते हैं।
- **सुसंगति सद्धिांत:**
  - [**इमैनुअल कांट**]() और **फ्रेडरकि हेगेल** जैसे वचिारकों का मानना है कि **सत्य का नरि्धारण वचिारों की आंतरकि संगत**ि से होता है, जहाँ एक कथन तभी सत्य होता है **जब वह ज्ञान के स्थापति ढाँचे के साथ सुसंगत** हो।
  - उदाहरण के लयि **वैज्ञानकि सद्धिांतों को सत्य माना जाता है, यदि वे आंतरकि रूप से सुसंगत हों** और व्यापक प्रकार की घटनाओं की व्याख्या करते हों।
  - यह सद्धिांत **संकीर्ण वचिार प्रणालयिों (Closed Belief Systems)** को जन्म दे सकता है जो **मौजूदा ढाँचे के वपिरीत नए साक्ष्य का वरिोध करते** हैं।
- **व्यावहारकि सद्धिांत:**
  - **वलियिम जेम्स और जॉन डेवी** जैसे वचिारकों का तर्क है कि **कसिी कथन की सत्यता उसकी व्यावहारकि उपयोगति एवं सफल परणिाम देने** की उसकी क्षमता द्वारा नरि्धारति होती है।
  - **उदाहरण: गुरुत्वाकर्षण का सद्धिांत** सत्य माना जाता है क्योंकि यह हमें वस्तुओं की गति का पूर्वानुमान लगाने और स्थरि संरचनाएँ बनाने की अनुमति देता है।
  - यह सद्धिांत सत्य को संदर्भ के सापेक्ष बनाता है **तथा मानवीय उपयोगति से स्वतंत्र वस्तुनष्ठि तथ्यों को ध्यान में** नहीं रखता।
- **महात्मा गांधी की सत्य की खोज:**
  - **ईश्वरीय सत्य और अहसिा:**
    - **गांधीजी का सत्य केवल तथ्यात्मक सटीकता** नहीं था। उन्होंने इसे **परम सत्य, ईश्वर के बराबर** बताया।
    - सत्य स्वाभावकि रूप से स्पष्ट है, लेकनि यह तभी स्पष्ट होता है जब इसके आस-पास का अज्ञान दूर हो जाता है। इस परम **सत्य** को **अहसिा के माध्यम** से समझा जा सकता है।
    - **उनका सत्य केवल एक अवधारणा नहीं है, बल्कि ईश्वर के समतुल्य एक शाश्वत सद्धिांत है,** जो सत्य की खोज और अहसिा के अभ्यास को अवभिाज्य बनाता है।
    - सत्य की अंतहीन खोज में आत्मनरीक्षण, नरिंतर प्रश्न पूछना और गलतयिों को स्वीकार करने की तत्परता शामलि थी,

जिसमें **सत्य को एक निर्धारित समापन बिंदु के बजाय आत्म-खोज की एक सतत् यात्रा के** रूप में देखना आवश्यक है।

- **सत्य का क्रियान्वयन:**
    - सत्य के प्रति **गांधी की प्रतिबद्धता उनके विरोध** के तरीकों तक फैली हुई थी। उन्होंने [सत्याग्रह] की रचना की, **जिसका अर्थ है "सत्य बल।"**
    - सत्याग्रहियों अर्थात् गांधीजी के अनुयायियों का उद्देश्य **सविनय अवज्ञा** और अटल सत्यनिष्ठा के माध्यम से उत्पीड़कों की अंतरात्मा को जागृत करना था।

सत्य की दुविधाएँ और जटिलताएँ क्या हैं?

- **सत्य की जटिलता:**
    - भारत के राष्ट्रीय प्रतीक चिह्न, [अशोक स्तंभ] **पर** स्थित **तीन सिंह, सत्य के तीन दृष्टिकोणों** के प्रतीक हैं: मेरा सत्य, आपका सत्य, और एक पर्यवेक्षक का सत्य।
    - **सत्य का चौथा, अपरिमेय आयाम अक्सर इस कहावत की ओर ले जाता है, "केवल ईश्वर ही सत्य जानता है।"**
    - उदाहरण के लिये, चुनाव के दौरान [भारत निर्वाचन आयोग] का कार्य चुनौतीपूर्ण हो जाता है।
        - चुनौती यह है कि [राजनीतिक दल] अक्सर चालाकी से जातिगत या सांप्रदायिक भाषा का प्रयोग करते हैं, जिससे [निर्वाचन आयोग] के लिये कार्रवाई करना कठिन हो जाता है।
        - [आदर्श आचार संहिता (Model Code of Conduct- MCC)], हालाँकि इन आधारों पर स्पष्ट अपील पर प्रतिबंध लगाती है, लेकिन इसमें मौजूद दोषों के कारण राजनीतिक दल **अप्रत्यक्ष** रूप से विभाजनकारी बयानबाज़ी कर सकते हैं।
- **सत्य और असत्य की दुविधा:**
    - [महाभारत] में **युधिष्ठिर के अर्धसत्य** जैसे ऐतिहासिक और पौराणिक आख्यान, सत्य के साथ छेड़छाड़ किये जाने पर सामने आने वाली नैतिक दुविधाओं को दर्शाते हैं।
    - युधिष्ठिर द्वारा **अश्वत्थामा की मृत्यु** की घोषणा के कारण **गलत व्याख्या** हुई, जिसके कारण **द्रोणाचार्य की मृत्यु** हो गई।
    - यह कहानी उन नैतिक जटिलताओं को रेखांकित करती है जो तब उत्पन्न होती हैं जब

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/many-facets-of-truth